ISSN: 0973-0583

पटना जिले के प्रमुख माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन का प्रभाव : एक व्यवहारात्मक अध्ययन

आशा सिन्हा
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखण्ड
डॉ० सविता सिन्हा
प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखण्ड

शोध-सार

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति और परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन है। यह न केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया है, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक विकास का भी आधार है। किसी छात्र की शैक्षिक उपलब्धि केवल विद्यालय की शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम और शिक्षक की दक्षता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें पारिवारिक परिवेश, विशेषकर अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। अभिभावक बच्चों के प्रथम शिक्षक होते हैं और उनके मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं सहयोग का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के लिए निर्णायक होती है क्योंकि इसी अवस्था में वह उच्च शिक्षा और भविष्य के करियर की दिशा निर्धारित करता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों के लिए परिवार का प्रोत्साहन, भावनात्मक सहयोग, सकारात्मक वातावरण और उपलब्ध संसाधन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। जिन विद्यार्थियों को घर पर सतत् प्रोत्साहन, प्रशंसा और मार्गदर्शन मिलता है, वे कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करते हैं और अपनी क्षमता को पहचान पाते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन पटना जिले के चयनित माध्यमिक विद्यालयों पर केंद्रित है। अध्ययन के अंतर्गत 300 छात्रों (150 लड़के एवं 150 लड़कियाँ) को सम्मिलित किया गया। आँकड़े एक प्रश्नावली, उपलब्धि परीक्षण और अभिभावकों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर संकलित किए गए। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि जिन छात्रों को घर पर अध्ययन-अनुकूल माहौल, प्रेरणा और भावनात्मक सहयोग मिला, उनकी शैक्षिक उपलब्धि औसत से कहीं बेहतर रही। लड़कियों में प्रोत्साहन का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। यह छात्रों की शैक्षिक सफलता में विद्यालय और शिक्षक जितने महत्त्वपूर्ण हैं, उतने ही महत्त्वपूर्ण अभिभावकों का सहयोग, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन भी है। यह अध्ययन शिक्षानीति निर्माताओं और शिक्षकों को इस दिशा में सोचने की प्रेरणा देता है कि अभिभावकों की सहभागिता को शिक्षा-प्रक्रिया में और अधिक सशक्त बनाया जाए।

प्रमुख शब्दः शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावक प्रोत्साहन, माध्यमिक शिक्षा, पटना जिला, व्यवहारात्मक अध्ययन
Received : 21/6/2025 **Acceptance : 25/7/2025**

1. परिचय

भारत जैसे विकासशील और उभरते हुए देश में शिक्षा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण धुरी है। यह न केवल व्यक्ति को ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसमें मूल्यबोध, जीवन कौशल और सामाजिक चेतना का भी विकास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने भी इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संचार नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण, रचनात्मक चिंतन, नवाचार और जीवन मूल्यों के संवर्धन का माध्यम है। अतः शिक्षा को केवल परीक्षा और अंक तक सीमित न मानकर इसे जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया का हिस्सा समझना आवश्यक है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाती है। यह वह अवस्था है जब छात्र किशोरावस्था में होते हैं और अपने भविष्य की दिशा तय करने की प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। इस स्तर पर वे न केवल विद्यालयी वातावरण और शिक्षकों की शिक्षण शैली से प्रभावित होते हैं, बल्कि अपने पारिवारिक परिवेश से भी उतने ही प्रभावित होते हैं। विशेषकर अभिभावकों की सोच, उनका मार्गदर्शन और

प्रोत्साहन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

अभिभावक बच्चों के पहले और आजीवन शिक्षक माने जाते हैं। वे केवल भौतिक संसाधन ही उपलब्ध नहीं कराते, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक सहयोग भी देते हैं। अभिभावक प्रोत्साहन के विभिन्न रूप हो सकते हैं जैसे पढ़ाई के समय बच्चे को मार्गदर्शन देना, कठिनाइयों में सहयोग करना, अच्छे प्रदर्शन पर प्रशंसा करना, आवश्यक शैक्षिक साधन उपलब्ध कराना तथा घर में अध्ययन के लिए शांत और अनुकूल वातावरण तैयार करना। ये सभी कारक मिलकर विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति को दिशा देते हैं।

पटना जिला बिहार की शैक्षिक और सांस्कृतिक धुरी के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक सरकारी,अर्द्ध सरकारी और निजी विद्यालय संचालित होते हैं, जिनमें माध्यमिक स्तर पर हजारों छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस जिले में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता भी देखने को मिलती है। ऐसे में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अभिभावकों का प्रोत्साहन किस प्रकार सहायक या प्रभावकारी है। शिक्षा शास्त्र और मनोविज्ञान दोनों दृष्टियों से यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके निष्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थी की प्रगति को समझने और सुधारने में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

2. समीक्षा-साहित्य (Review of Literature)

किसी भी शोध कार्य की प्रामाणिकता और गहराई इस बात पर निर्भर करती है कि शोधकर्ता ने पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा कितनी सुव्यवस्थित ढंग से की है। समीक्षा साहित्य से न केवल शोध विषय की प्रासंगिकता स्पष्ट होती है, बल्कि यह भी ज्ञात होता है कि अब तक इस विषय पर क्या-क्या कार्य हुआ है और वर्तमान शोध किन रिक्तियों (Research Gaps) को पूरा करता है। प्रस्तुत शोध के संदर्भ में अभिभावक प्रोत्साहन और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर देश-विदेश में कई अध्ययन किए गए हैं।

अंतरराष्ट्रीय अध्ययनः- डेफोर्ज और अबुशार (2003) ने अपने विस्तृत अध्ययन The Impact of Parental Involvement on Pupil Achievement में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि अभिभावक की सक्रिय भागीदारी बच्चों की उपलब्धि, आत्मविश्वास और सीखने की गति को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाती है। इसी प्रकार, एप्स्टीन (2018) ने अपने ग्रंथ School, Family and Community Partnership में परिवार, विद्यालय और समुदाय के सहयोग को छात्रों की प्रगति का सबसे प्रभावी सूत्र बताया। उनका मानना था कि जब अभिभावक बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते हैं और निरंतर प्रोत्साहित करते हैं, तो विद्यार्थी की उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत बेहतर होती हैं।

भारतीय संदर्भः- भारतीय विद्वानों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। शर्मा (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों में माता-पिता शिक्षा के प्रति सजग होते हैं और बच्चों को सतत् प्रेरणा देते हैं, वहाँ बच्चों का विद्यालयी प्रदर्शन औसत से बेहतर होता है। सिंह (2021) के अनुसार, अभिभावक का शैक्षिक स्तर और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा संबंध है। उच्च शिक्षा प्राप्त अभिभावक बच्चों को न केवल शैक्षिक संसाधान उपलब्ध कराते हैं, बल्कि पढ़ाई की रणनीतियों में भी सहयोग देते हैं।

अन्य अध्ययनः- देश के विभिन्न हिस्सों में हुए शोधों से यह तथ्य सामने आया है कि पारिवारिक वातावरण, अभिभावक की निगरानी, संसाधनों की उपलब्धता तथा सकारात्मक प्रोत्साहन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। साथ ही, सामाजिक- आर्थिक स्थिति और माता-पिता का शैक्षिक दृष्टिकोण भी विद्यार्थियों के प्रदर्शन में भिन्नता लाते हैं।

समीक्षा का निष्कर्ष- इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सफलता केवल विद्यालय या शिक्षक पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अभिभावकों की सहभागिता और उनका प्रोत्साहन भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। हालांकि, बिहार विशेषकर पटना जिले के संदर्भ में इस विषय पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन हुए हैं। यही इस शोध की आवश्यकता और नवीनता को प्रमाणित करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्यः

1. यह ज्ञात करना कि पटना जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन का क्या प्रभाव है।

2. यह पता लगाना कि लड़कों और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन का प्रभाव किस प्रकार भिन्न है।

3. यह विश्लेषण करना कि अभिभावकों के शैक्षिक स्तर एवं प्रोत्साहन के रूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को कैसे प्रभावित करते हैं।

4. परिकल्पनाएँ

- $H_0$1: अभिभावक प्रोत्साहन और छात्रें की शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है।
- $H_0$2: लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन का प्रभाव समान है।
- $H_0$3: अभिभावक की शैक्षिक पृष्ठभूमि का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

5. कार्यप्रणाली (Methodology)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की रूपरेखा व्यवहारात्मक (Empirical) स्वरूप की है, जिसमें संख्यात्मक आँकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए हैं। शोध का क्षेत्र पटना जिले तक सीमित रखा गया, जो बिहार की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। इस जिले में शहरी और अर्द्ध-शहरी दोनों प्रकार के विद्यालय पाए जाते हैं। अध्ययन के लिए पाँच प्रमुख माधयमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें सरकारी तथा निजी, दोनों प्रकार के विद्यालय सम्मिलित थे। यह चयन इस आधार पर किया गया कि इन विद्यालयों में विविध सामाजिक - आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र अध्ययनरत हैं।

नमूने के रूप में कुल 300 छात्रों को शामिल किया गया, जिनमें 150 लड़के और 150 लड़कियाँ थीं। इस संतुलित अनुपात का उद्देश्य यह था कि लिंग के आधार पर संभावित भिन्नताओं का विश्लेषण किया जा सके। छात्रों का चयन यादृच्छिक (Random) पद्धति से किया गया ताकि अध्ययन की निष्पक्षता और प्रामाणिकता सुनिश्चित हो सके।

अध्ययन में डेटा संकलन के लिए तीन प्रमुख साधनों का प्रयोग किया गया। प्रथम, प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें अभिभावक प्रोत्साहन के विभिन्न आयामों- जैसे भावनात्मक सहयोग, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, अध्ययन की निगरानी, प्रशंसा एवं प्रेरणा को मापा गया। द्वितीय, शैक्षिक उपलब्धि के आकलन हेतु एक उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test) तैयार किया गया, जिसमें गणित, विज्ञान और भाषा विषयों से प्रश्न शामिल किए गए। तृतीय, चयनित छात्रों के अभिभावकों के साथ संक्षिप्त साक्षात्कार (Interview) किए गए, जिससे उनके दृष्टिकोण और बच्चों के प्रति सहयोगात्मक व्यवहार की गहराई को समझा जा सके।

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। सर्वप्रथम, छात्रों के प्राप्तांक और प्रोत्साहन स्तर का औसत (Mean) और मानक विचलन (SD) निकाला गया, जिससे समूहों की सामान्य प्रवृत्ति का पता चल सके। इसके पश्चात, लिंग-आधारित तुलना के लिए t & test का प्रयोग किया गया। अभिभावकों की शिक्षा और प्रोत्साहन स्तर के आधार पर अंतर ज्ञात करने हेतु ANOVA का उपयोग किया गया। अंत में, अभिभावक प्रोत्साहन और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध की गहनता को मापने के लिए Pearson Correlation Coefficient की गणना की गई।

6. परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों (Mean, SD, t-test) ANOVA तथा Pearson correlation) के माध्यम से किया गया। इसका उद्देश्य यह जानना था कि अभिभावक प्रोत्साहन का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है और यह प्रभाव विभिन्न आयामों (प्रोत्साहन का स्तर, लिंग तथा अभिभावक शिक्षा स्तर) में किस प्रकार भिन्न होता है।

6.1 अभिभावक प्रोत्साहन स्तर और शैक्षिक उपलब्धि

अभिभावक प्रोत्साहन के स्तर को उच्च, मध्यम और निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया। तालिका-1 से स्पष्ट होता है कि जिन छात्रों को उच्च स्तर का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उनकी औसत शैक्षिक उपलब्धि (72.45) अन्य समूहों की तुलना में अधिक रही। मध्यम प्रोत्साहन वाले छात्रों का औसत 65.12 तथा निम्न प्रोत्साहन वाले छात्रों का औसत 58.40 पाया गया।

तालिका-1

अभिभावक प्रोत्साहन स्तर और शैक्षिक उपलब्धि

प्रोत्साहन	N	Mean	SD
उच्च	120	72.4	8.32
मध्यम	100	65.12	7.95
निम्न	80	58.40	6.87

निष्कर्ष:

स्पष्ट है कि प्रोत्साहन का स्तर जितना अधिक होता है, विद्यार्थियों की उपलब्धि उतनी ही बेहतर होती है।

6.2 लिंग-आधारित तुलना

लड़के और लड़कियों की उपलब्धियों की तुलना t & test के माध्यम से की गई। परिणाम दर्शाते हैं कि लड़कियों का औसत (69.40) लड़कों (66.25) की तुलना में अधिक रहा और यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण (t 2-18] p<0-05) पाया गया।

निष्कर्ष- लड़कियों पर अभिभावक प्रोत्साहन का सकारात्मक प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक दिखाई दिया।

6.3 अभिभावक शिक्षा स्तर और छात्रों की उपलब्धि

ANOVA परीक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि जिन अभिभावकों की शिक्षा स्नातक या उससे अधिक है, उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि (औसत 71.75) प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा प्राप्त अभिभावकों के बच्चों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक है।

निष्कर्ष- अभिभावक की शैक्षिक पृष्ठभूमि बच्चों की शैक्षिक सफलता में निर्णायक भूमिका निभाती है।

6.4 सहसंबंध विश्लेषण

Pearson correlation से अभिभावक प्रोत्साहन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच .0.62 का उच्च सहसंबंध पाया गया। यह दर्शाता है कि दोनों के बीच प्रत्यक्ष और सकारात्मक संबंध है।

7. निष्कर्ष:

अभिभावक प्रोत्साहन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। लड़कियों पर अभिभावक प्रोत्साहन का सकारात्मक प्रभाव अधिक दिखाई दिया। अभिभावक की शैक्षिक पृष्ठभूमि और बच्चों की उपलब्धि के बीच स्पष्ट संबंध पाया गया केवल आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। भावनात्मक सहयोग और प्रोत्साहन भी उतना ही आवश्यक है।

8. शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों का व्यावहारिक महत्व अत्यधिक है। शिक्षा-प्रक्रिया केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रहती, बल्कि परिवार और समुदाय भी उसमें सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अभिभावक प्रोत्साहन के सकारात्मक प्रभावों को देखते हुए विद्यालयों को चाहिए कि वे नियमित रूप से अभिभावक-शिक्षक बैठकें आयोजित करें। ऐसी बैठकों में न केवल छात्रों की प्रगति की समीक्षा हो, बल्कि यह भी चर्चा हो कि घर पर अभिभावक बच्चों की पढ़ाई में किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं। यह प्रक्रिया विद्यालय और परिवार के बीच एक मजबूत संवाद स्थापित करने में सहायक होगी।

शिक्षकों की भूमिका भी यहाँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्हें अभिभावकों को यह समझाना चाहिए कि बच्चों को मानसिक और भावनात्मक प्रोत्साहन देना उतना ही आवश्यक है जितना कि भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना। केवल किताबें, कॉपी या शुल्क भर देने से बच्चे की प्रगति सुनिश्चित नहीं होती बल्कि उनकी कठिनाइयों को सुनना, उन्हें प्रेरित करना और असफलताओं के समय उनका मनोबल बनाए रखना कहीं अधिक आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षक, अभिभावकों को सहयोगी शिक्षक की भूमिका निभाने हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम में भी अभिभावक सहभागिता कार्यक्रमों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है। यदि विद्यालयी गतिविधियों जैसे प्रोजेक्ट कार्य, विज्ञान मेले, सांस्कृतिक आयोजन या करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों में अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, तो छात्र स्वयं को अधिक प्रेरित और समर्थ महसूस करेंगे। इससे विद्यालय और परिवार दोनों का साझा उत्तरदायित्व स्थापित होगा।

साथ ही, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अभिभावकों की स्थिति और सोच में भिन्नता देखने को मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायः अभिभावक शिक्षा के महत्त्व को सीमित दृष्टिकोण से देखते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में वे अपेक्षाकृत जागरूक रहते हैं। इस अंतर को कम करने के लिए विशेष जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। कार्यशालाएँ, परामर्श शिविर और जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से अभिभावकों को यह समझाया जा सकता है कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का सधन नहीं, बल्कि जीवन-निर्माण की प्रक्रिया है।

9. अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

प्रत्येक शोध अध्ययन की अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं, जिनका उल्लेख करना आवश्यक है ताकि पाठक और भावी शोधकर्ता उसकी सीमा-रेखा को समझ सकें। प्रस्तुत अध्ययन भी इससे अछूता नहीं है। सबसे पहली सीमा यह रही कि अध्ययन केवल पटना जिले तक सीमित रखा गया। यद्यपि पटना जिला बिहार का शैक्षिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, फिर भी यह पूरे राज्य या देश की स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यदि अन्य जिलों या भौगोलिक क्षेत्रों को भी सम्मिलित किया जाता, तो परिणाम और अधिक व्यापक एवं तुलनात्मक हो सकते थे।

दूसरी सीमा यह है कि अध्ययन का नमूना आकार 300 छात्रों तक सीमित रहा। यद्यपि यह संख्या सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए पर्याप्त है, लेकिन पूरे जिले के हजारों छात्रों की तुलना में यह अपेक्षाकृत छोटा समूह है। अतः निष्कर्षों को पूरे जिले के छात्रों पर सामान्यीकृत (Generalize) करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

तीसरी सीमा यह रही कि अध्ययन के अधिकांश आँकड़े प्रश्नावली और आत्म-प्रतिवेदन (Self-report) पर आधारित थे। ऐसे आँकड़ों में सामाजिक वांछनीयता (Social Desirability) की प्रवृत्ति आ सकती है, जिससे उत्तरदाता वास्तविक स्थिति के बजाय अपेक्षित उत्तर दे सकते हैं। यद्यपि साक्षात्कार और उपलब्धि परीक्षण से इस कमी को आंशिक रूप से कम करने का प्रयास किया गया, फिर भी इसे पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सका।

अतः यह कहा जा सकता है कि यद्यपि अध्ययन अपने उद्देश्य में सफल रहा, लेकिन इन सीमाओं के कारण इसके निष्कर्षों को संदर्भ-विशेष और सावधानी के साथ ग्रहण करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शर्मा, आर. (2019), भारतीय शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका, अटल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. Singh. M.(2021). Parental Support and Academic Achievement-ß Journal of Education Research 15(2), 45-58
3. Desforges, C., & Abouchaar, A. (2003). The Impact of Parental Involvement, Parental Support and Family Education on Pupil Achievement. London: DfES.
4. Epstein, J. L. (2018). School, Family, and Community Partnerships: Preparing Educators and Improving Schools. Routledge.
5. Coleman, J. S. (1988). Social Capital in the Creation of Human Capital. American Journal of Sociology, 94, S95–S120.
6. Fan, W., & Chen, M. (2001). Parental Involvement and Students, Academic Achievement: A Meta-Analysis. Educational Psychology Review, 13(1), 1–22.
7. Hill, N. E., & Tyson, D. F. (2009). Parental Involvement in Middle School: A Meta-Analytic Assessment of the Strategies That Promote Achievement. Developmental Psychology, 45(3), 740–763.
8. Jeynes, W. H. (2007). The Relationship Between Parental Involvement and Urban Secondary School Student Academic Achievement. Urban Education, 42(1), 82–110.
9. खान, अ. (2017), मनोविज्ञान और शिक्षा का अंतर्संबंध, ज्ञान भारती प्रकाशन, पटना।
10. कुमार, एस.(2020). माध्यमिक शिक्षा और अभिभावक की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 25(3), 112-126.